Notes

* प्रस्तावना 0/0

मनुष्य के भीतर एक ऐसी क्षमता विद्यमान है जिससे वह दूसरो से परामर्श एंव निर्देशन ले सकता है। और दूसरो को परामर्श एंव निर्देशन प्रदान कर सकता है। वह अपने सामान्य एंव संकट के क्षणो में एक-दूसरे की मदद करने के लिये अपेक्षित निर्देशन देता है। जिससे उसकी वैयक्तिक एंव सामाजिक जीवनधारा निर्वाध रूप से चलती रहती है। निर्देशन अर्थात दिशा दिखाने की प्रवृत्ति हर सामाजिक व्यवस्था मे किसी न किसी रूप में कार्यशील रही है। इसका वर्तमान स्वरूप 20 वी शताब्दी की देन है।

वैसे तो निर्देशन का अर्थ बताने के लिये भिन्न-भिन्न मत देखने को मिलते है। फिर भी निर्देशन को परिभाषित करते हुये कहा जा सकता है। कि निर्देशन एक ऐसी क्रिया है। जिसमे कुछ विशेष प्रकार के निर्देशन कर्मियो के माध्यम से व्यक्ति को उसकी समस्या तथा विकल्प बिन्दुओ से निपटने मे